ॐ नमः हरि ॐ नमः ॐ नमः हरि ॐ नमः ॐ नमः हरि ॐ नमः ॐ नमः हरि ॐ नमः ॐ नमः हरि ॐ नमः ॐ नमः हरि ॐ नमः ॐ नमः हरि ॐ नमः

श्री गीता मन्थन

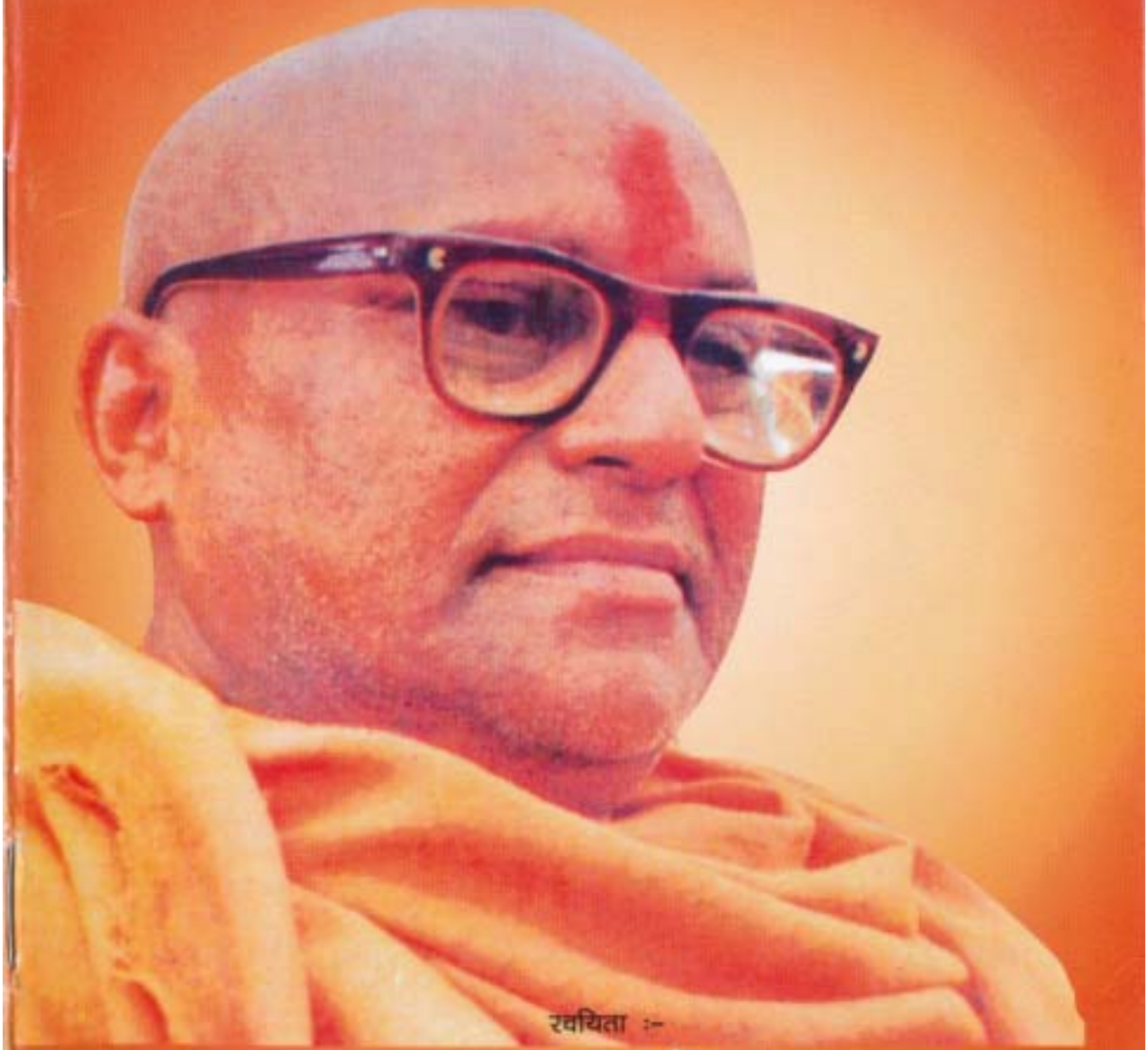

रचयिता :-

पूज्यचरण सद्गुरुदेव

श्री स्वामी गीतानन्द जी महाराज भिक्षुः

सर्वाधिकार सुरक्षित
संस्था की लिखित आज्ञा के बिना यह पुस्तक छपवाना मना है।

श्री गीता कुटीर स्वर्गाश्रम ऋषिकेश में
मौन महाव्रत 1982 में पूज्य चरण सदगुरुदेव

द्वारा विरचित

प्रकाशक –
मुमुक्षु मण्डल (रजि.)
श्री गीता कुटीर तपोवन हरिद्वार
फोन :- 01334-260285

॥ श्री सद्गुरु देवाय नमः॥

ग्रन्थ परिचय

प्रिय पाठकों,

पुस्तक पढ़ते समय प्रायः पाठक के मन में यह प्रश्न उठता है कि प्रस्तुत पुस्तक का नाम गीता मन्थन क्यों? संक्षिप्त उतर यह है कि 'सर्वशास्त्रमयी गीता' अथवा ''सर्वोपनिषदो गावो:'' इत्यादि वचनों से सिद्ध होता है कि सर्व धर्म-ग्रंथों की सार-भूत धर्म-ग्रन्थ श्री गीता जी हैं और श्री गीता जी का श्रवण, मनन एवं अध्ययन करने से जो श्री गीता जी का सारांश भावार्थ निकला, उसे अति सरल हिन्दी में हरि गीतिका छन्द में लिपिबद्ध किया गया है। इसलिये इसका नाम **गीता मन्थन** रखा गया है। जैसे विधिवत् गोदुग्ध मन्थन करने के बाद जो सार निकलता है, वह गोदुग्ध नहीं रह जाता, अपितु उसका नाम तो मक्खन या गोघृत हो जाता है। वैसे ही सर्व धर्म-ग्रन्थों का सार श्री गीता जी और गीता जी के मनन निदिध्यासन आदि का जो सार निकला वह गीता मन्थन नाम से आपके समक्ष है।

इस गीता मन्थन में संक्षिप्त रूप से मनुष्य के जीवन की कहानी तथा जन्म, जीवन, मृत्यु की यात्रा ''पुनरपि जननं पुनरपि मरणं'' का वर्णन है। कर्म की डोर से बँधा जीव कभी ऊपर कभी नीचे योनियों में आता जाता रहता है।

तथपि हर मनुष्य का अपना मन है, अपनी बुद्धि है और अपने सोचने का ढंग है। जिसका स्वभाव ही छिद्रान्वेषण का होगा या कमी ढूँढने का होगा, उस बुद्धिमान को तो कमी ही कमी दिखाई देंगी। उसके लिये तो कहीं भी कमी की कमी नहीं है, किन्तु जो सरल स्वभाव हृदय के खोजी जिज्ञासु हैं, उनके लिए तो यह अवश्य हितकर होगी, भय-शोक-निवारिणी, लोभ-मोह नाशिनी तथा आत्म-बोध-प्रदायिनी होगी और ऐसे जिज्ञासु जनों के लिए ही यह पुस्तक प्रस्तुत की गयी है।

जनता जनार्दन का हितेच्छु

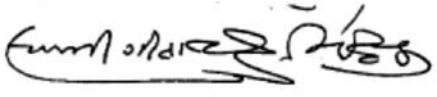

स्वामी गीतानन्द (भिक्षु:)

सद्गुरु वन्दना

मंगलमय गुरु के पद पंकज, मंगलमय गुरु की प्रिय बानी।
मंगलमय गुरु की दिनचर्या, मंगलमय गुरु भक्ति बखानी।।
मंगलमय गुरु के शुभ दर्शन, मंगलमय गुरु कीर्ति अमानी।
मंगलमय नख से शिख लौं, गुरु मूरति वेद पुराणन गानी।।

दोहा- नमो नमो श्री जगद्गुरु, नमो सच्चिदानन्द।
नमो विघ्ननाशक पिता, काटो भव के फन्द।।

चौपाई- नमो वेद विद्या के, भण्डार दाता।
नमो देव देवाधि, पतयो विधाता।।
नमो मोह, अज्ञान, हर लेने वाले।
नमो ब्रह्म विद्या का वर देने वाले।।1।।
नमो शोक, सन्ताप, दारिद्र हर्ता।
नमो हर्षवर्धक, सदानन्द कर्ता।।
नमो सच्चिदानन्द, आनन्द दाता।
नमो देव देवाय, मुक्ति प्रदाता।।2।।
नमस्कार देव, जगत् कारणाय।
नमोऽदैत तत्वाय, शान्ति प्रदाय।।
नमस्कार पापों का क्षय करने वाले।
नमस्कार जन को अभय करने वाले।।3।।
नमो देव श्री सद्गुरु ब्रह्म रूपम्।
नमो ब्रह्म विद्या के वक्ता अनूपम्।।
नमो "भिक्षु:" भूपों के भूपादि भूपम्।
नमोऽहं सदा सर्वदा, सर्वरूपम।।4।।

अथ श्री गीता मन्थन

1

हे मेरे इष्टदेव सद्गुरुदेव, करुणा कीजिये।
जिससे हो उद्धार, वह उपदेश मुझको दीजिये।।
लीजिये, मुझको शरण में, शिष्य हूँ मैं आपका।
मोह माया से तपाया हूँ, मैं तीनों ताप का।।

2

ज्ञान भक्ति से रहित हूँ, साधना कुछ भी नहीं।
क्या करूँ जाऊँ कहाँ, नहीं ठौर मेरा है कहीं।।
सब तरफ से हारकर, भगवन् शरण ली आपकी।
आप ही कुछ विधि बता दो, पाठ पूजा जाप की।।

3

प्रार्थना सुन शिष्य की, गुरुदेव समझाने लगे।
ज्ञान की गंगा में, शरणागत को नहलाने लगे।।
जन्म जन्मान्तर के मल, अज्ञान को धोने लगे।
मोह ममता अहमता, जड़ मूल से खोने लगे।।

4

बोले सद्गुरु शिष्य तुम, निज रूप को पहचान लो।
देह मेरी 'मैं' नहीं, मिथ्या इसे तुम जान लो।।
जन्म से पहले न थी, नहीं अन्त में रह जायेगी।
एक दिन वह आयेगा, जब मौत इसको खायेगी।।

5

देखकर रंग रूप तूँ, सुन्दर जिसे है मानता।
इसके अन्दर क्या भरा? क्या तूँ इसे नहीं जानता।।
अस्थि पिंजर देह यह, नस नाड़ियों से है कसा।
चर्म चादर से ढका है, जिसमें तेरा मन फंसा।।

6

मिट्टी पानी से बनी, मिट्टी में फिर मिल जायेगी।
ख़ाक होगी यह किसी के, काम भी नहीं आयेगी।।
फिर हमेशा के लिये, नामो निशाँ मिट जायेगा।
भूल जायेंगे किसी को, याद भी नहीं आयेगाा।।

7

सृष्टि की रचना है मिट्टी, पानी के संयोग से।
तेज, वायु, गगन, इन, तीनों के भी सहयोग से।।
पाँच तत्त्वों से ही सारे, जगत का ढाँचा बना।
कोई बैठा बाप बनकर, कोई है चाचा बना।।

8

बाप बेटा या भतीजा, थोड़े दिन का खेल है।
तीर्थ यात्रा में मिले, यात्री का जैसे मेल है।।
मेल मिथ्या है सभी से, बिछुड़ जायेंगे सभी।
इस तरह बिछुड़ेंगे मुड़कर, मिल न पायेंगे कभी।।

9

आज जिनको देखे बिनु, मन को न पड़ता चैन है।
दिन तो आशा में बिताते, बीतती नहीं रैन है।।
वे ही ऐसा बिछुड़ेंगे, जो फिर नजर नहीं आयेंगे।
देखते ही देखते, मिट्टी में घुल मिल जायेंगे।।

10

देह नश्वर है सदा, अपवित्र है दु:ख मूल है।
देह को 'मैं' मानना, यह बहुत भारी भूल है।।
इसके अन्दर थूक कफ, मल-मूत्र का भण्डार है।
कौन तेरा 'मैं' है इसमें, किससे तेरा प्यार है।।

11

तूँ इसे है जानता, तुझको नहीं यह जानता।
तूँ इसको अपना मानता, यह तुझको कुछ नहीं मानता।।
देह को 'मैं' मानना, मस्तिष्क मानो फेल है।
देह जड़, चेतन है तूँ, क्या इसका तेरा मेल है।।

12

हर समय रहता बदलता, पल भी टिकता है नहीं।
यह बदलना धर्म इसका, सब को दिखता है नहीं।।
इसलिये हर उमर में, अभिमान तूँ करता रहा।
बाल हूँ कभी तरुण हूँ, कभी वृद्ध बन मरता रहा।।

13

देह को 'मैं' मानकर, कर्मो का कर्ता बन गया।
फल भोगने के लिये, धारण किया चोला नया।।
जिस तरह का कर्म था, चोला भी वैसा सिल गया।
वैसे ही फल भोगने को, चोला वैसा मिल गया।।

14

कर्म के अनुसार ही, हंकार से पकड़ा गया।
पेट में नौ मास माँ की, माँस से जकड़ा गया।।
सूमय पूरा हो गया, चेहरे पर रौनक छा गई।
पिछले जन्मों की कहानी, याद सारी आ गई।।

15

खाता लाखों जन्म का, बन कर सामने आ गया।
जन्मने मरने का चक्कर, देखकर घबड़ा गया।।
गिड़गिड़ा करके कहा, भगवन्! कृपा कुछ कीजिये।
भक्ति करने के लिये, इक बार मौका दीजिये।।

16

जन्म मृत्यु से दुःखी, धक्के बहुत मैं खा लिया।
लाख चौरासी की हर, योनि के अन्दर जा लिया।।
कर्म के अनुसार मेरे, साथ सब कुछ हो चुका।
ऊँट घोड़ा बैल बनकर, भार भी मैं ढो चुका।।

17

पशु बना पक्षी बना, कभी बनकर आया श्वान है।
लाख चौरासी भटक कर, फिर बना इंसान है।।
अब मैं भूलूँगा नहीं, परमात्मा के नाम को।
भूलकर भी नहीं करूँगा, अब मैं खोटे काम को।।

18

हे प्रभो इस नरक से, अब मुझको बाहर कीजिये।
भक्ति करने के लिये, मुझे फिर से अवसर दीजिये।।
सुनकर तेरी प्रार्थना, भगवान ने अवसर दिया।
समय पूरा हो चुका था, गर्भ से बाहर किया।।

19

बाहर आते ही तुझे, माया ने फिर घेरा दिया।
याद अन्दर की भुलाकर, वश में अपने कर लिया।।
खेलने हँसने व रोने, में तेरा बचपन गया।
आई तरुणाई तो तरुणी का, पति तूँ बन गया।।

20

विषय भोगों में ही तेरा, समय फिर जाने लगा।
करके मदिरा पान गन्दे, गीत भी गाने लगा।।
बीड़ी, सिगरेट, पान खाने, में मजा आने लगा।
मछली, मुर्गी, अण्डे, बकरी, भेड़ सब खाने लगा।।

21

बन गया कामी व क्रोधी, लोभ मन पर छा गया।
भूलकर वादा कर्म, खोटा ही मन को भा गया।।
थोड़े दिन का मौज मेला, था बुढ़ापा आ गया।
अकल सूरत शक्ल जो थी, काल सबको खा गया।।

22

होश अब आई है जब सब, अङ्ग ार- ार हो गये।
काँपते हैं हाथ थर-थर, पैर मानो सो गये।।
कानों से सुनता नहीं, आँखों से दिखता मन्द है।
देह से शक्ति गई अब, चलता फिरना बन्द है।।

23

फूल यौवन का तेरा जब, सूख कर कुम्हला गया।
आज वादा गर्भ का वह, याद तुझको आ गया।।
आ गया तो आ गया, उद्धार तो हो जायेगा।
किन्तु जीवन मुक्ति का, आनन्द अब नहीं पायेगा।।

24

क्योंकि देहेन्द्रिय से शक्ति, सारी अब जाती रही।
जल चुका है तेल दीपक, खाली अब बाती रही।।
श्रवण शक्ति न रही, नहीं मनन अब हो पायेगा।
मनन निदिध्यासन बिना, निज रूप कैसे ध्यायेगा।।

25

ध्यान चिन्तन के बिना, अनुभव न होगा आत्मा।
आत्मा अनुभव बिना, कैसे मिलें परमात्मा।।
आत्मा परमात्मा, अनुभव में जब नहीं आयेगा।
कैसे जीवन मुक्ति का, आनन्द फिर तूँ पायेगा।।

26

किन्तु ईश्वर की कृपा, सन्तों के आशीर्वाद से।
भक्ति कर भगवान की, बच जायेगा जल्लाद से।।
अब भी कर पुरुषार्थ बिगड़ी, बात सब बन जायेगी।
नाम जप कर साधना की, शक्ति तुझ में आयेगी।।

27

साधना अब यह करो, सुमिरन करो हरिनाम का।
सब तरफ से मन हटाकर, ध्यान कर घनश्याम का।।
त्याग कर चिन्ता सभी, निज रूप का चिन्तन करो।
सच्चिदानन्द रूप 'मैं' हूँ, झूमकर कीर्तन करो।।

28

शुद्ध चेतन आत्मा, साक्षी स्वयं को जान लो।
बोध रूप विशुद्ध निर्मल, ज्ञान निज को मान लो।।
अज अजर अविनाशी है, अग्नि से तूँ जलता नहीं।
वायु से शोषण नहीं, पानी से तूँ गलता नहीं।।

29

शस्त्र कोई भी हो तेरा, नाश कर सकता नहीं।
निर्विकारी आत्मा है, तूँ कभी मरता नहीं।।
तूँ अजन्मा है निरञ्जन, है तूँ ज्ञान स्वरूप है।
देह, इन्द्रिय, प्राण, मन, बुद्धि का साक्षी भूप है।।

30

देह जड़ नश्वर विकारी, मिथ्या है दु:ख रूप है।
देह में अभिमान करके, तूँ पड़ा भवकूप है।।
देह को 'मैं' मानना, सबसे बड़ी यह भूल है।
भूल ही अज्ञान है, अज्ञान ही दु:ख मूल है।।

31

आज से निश्चय करो, हर अङ्ग का ज्ञाता हूँ मैं।
अङ्ग में रहकर अङ्ग का, प्रेरणा दाता हूँ मैं।।
देह में रहता हुआ भी, देह से न्यारा हूँ मैं।
देह इन्द्रिय प्राण मन, बुद्धि से भी प्यारा हूँ मैं।।

32

आत्मा चेतन हूँ मैं, नहीं नाम हूँ नहीं रूप हूँ।
'भिक्षु:' हूँ भगवत कृपा का, अप्रमेय अनूप हूँ।।
बस इसी साधन से मन की, मैल सब धुल जायेगी।
शुद्ध होगा हृदय मन में, शान्ति भी आ जायेगी।।

33

पाठ जो इसका करेगा, या सुनेगा ध्यान से।
होगा अनुभव आत्मा, भरपूर होगा ज्ञान से।।
करके अनुभव आत्मा का, मुक्त वह हो जायेगा।
'भिक्षुः' ईश्वर गुरु कृपा से, वह परम पद पायेगा।।

34

करना था जो कर चुके, लिये जान जो था जानना।
अब नही शंका रही, लिये मान जो था मानना।।
मोह निद्रा से जगे, सोना था जब तक सो लिये।
'भिक्षुः' ईश्वर गुरु कृपा की, प्रेम से जय बोलिये।।

ॐ नमः हरि ॐ नमः ॐ नमः हरि ॐ नमः ॐ नमः हरि ॐ नमः ॐ नमः हरि ॐ नमः ॐ नमः हरि ॐ नमः ॐ नमः हरि ॐ नमः ॐ नमः हरि ॐ नमः

चेतावनी

बड़ी भूल

मनुष्य सम्मान और सम्मान को पाकर
फूल जाता है।
देने वाले ईश्वर को भूल जाता है।
यही बड़ी भूल है।

स्वामी गीतानन्द मिश्र

1

लगा हर स्वाँस पर पहरा, मौत का बेखबर सुन ले।
पता क्या है, कौन सी, स्वाँस को तेरी मौत चुन ले।।
है जब तक स्वाँस, तब तक तूँ, अगर चाहे तो कुछ कर ले।
भक्ति भगवान की कर ले, खज़ाना नाम से भर ले।।

2

निकल जायेगा दम तो, कौड़ी का महँगा है तन तेरा।
न कोई पास बैठेगा, न कोई फिर कहे मेरा।।
न कोई पानी पूछेगा, न कोई पूछेगा खाना।
कहेंगे ले चलो इनको, अभी श्मशान पहुँचाना।।

3

जो घर आते ही सब तेरे, लिये भोजन बनाते थे।
बड़े सत्कार से सब बैठकर, तुझको खिलाते थे।।
कोई सोडा की बोतल लाता, कोई दूध लाते थे।
कोई कोका कोई लिम्का, कोई कॉफ़ी पिलाते थे।।

4

वे अब घर में तेरे रहते, नहीं भोजन पकायेंगे।
कढ़ी चावल या रोटी दाल, कुछ भी नहीं बनायेंगे।।
नहीं वे खायेंगे कुछ भी, नहीं तुझको खिलायेंगे।
काम सब छोड़कर पहले, तुझे मरघट पहुँचायेंगे।।

5

वहाँ जाकर करेंगे क्या, उसे भी ध्यान से सुन ले।
समझ आ जाये तो, अच्छा-सा कोई रास्ता चुन ले।।
वहाँ ले जाकर अर्थी को, चिता पर रख दी जायेगी।
भला यह देखकर हालत, तरस किसको न आयेगी।।

6

मगर कर क्या कोई सकता, नहीं अब कोई चारा है।
भजन भगवान के बिनु अब, नहीं कोई सहारा है।।
खड़े हैं मित्रगण साथी, जो सच्चे यार बनते थे।
धर्मपत्नी बहू-बेटे, जो सब परिवार बनते थे।।

7

आज अब साथ में लाला के, जाने वाला कौन है।
बिना भगवान के बिगड़ी, बनाने वाला कौन है।।
वहीं घी डालकर मुख पर, फिर उसमें अग्नि लगा दी।
अरे देखो, भला दुनियाँ के लोगों, कैसी सज़ा दी।।

8

कभी जिस तन को ठण्डे जल से, व साबुन से नहलाते।
कभी जिस तन को तेल इतर, सुगन्धित से महकाते।।
कभी जिस तन को वस्त्र और, आभूषण से सजाते।
आज उस तन में वे ही, लोग कैसे आग लगाते।।

9

रहे सब देखते ही लोग, वह जलता चला गया।
उसी अग्नि में जल कर, राख वह बनता चला गया।।
और फिर राख बनकर खाक में, मिलता चला गया।
और अपने कर्म पर, रोता व पिटता चला गया।।

10

बहुत जोड़ा था जिस धन माल को, सब छोड़कर गया।
आज सबसे सदा के लिये, नाता तोड़कर गया।।
जो दौलत जोड़ने में वर्ष, कई मास लगे थे।
आज वह छोड़ने में, कुछ मिनट ही खास लगे थे।।

11

सगे-सम्बन्धी, सब श्मशान से, घर लौटकर आये।
कोई रोये कोई पीटे, कोई कुछ उसको समझाये।।
कोई कहता बनावो भोजन, कुछ मेहमान आये हैं।
सभी बैठे हैं भूखे, रात को भी, कुछ न खाये हैं।।

12

जला चूल्हा बना भोजन, सभी ने पेट भर खाये।
गये सब लौट घर अपने, जहाँ से जो भी थे आये।।
सगे-सम्बन्धी ही फिर शोक, कुछ दिन तक मनाते हैं।
गये दस दिन तो, धीरे-धीरे वे भी, भूल जाते हैं।।

13

पूज्य माता-पिता, पत्नी-पति, जो बहिन-भाई थे।
जो हर दम हर समय, हर काम में, होते सहाई थे।।
बड़े-छोटे, बहू-बेटे, सगे कन्या दामाद थे।
सुखद परिवार सारा नेक था, खुद भी उस्ताद थे।।

14

आज वह चाँद सी सूरत, कहाँ काफूर हो गई।
जो हम सबसे, सदा-सदा के लिये, दूर हो गई।।
अरे! संसार क्या बना है, यह सब धोखाधड़ी है।
यहाँ फैलाकर माया जाल, सबके पीछे पड़ी है।।

15

मेरे सत्संगियों तुम देख लो, संसार यही है।
अन्त में सबके साथ होता है, व्यवहार यही है।।
भले 'भिक्षुः' यति हो, या कोई, योगी फकीर हो।
कोई पंडित, पुजारी पीर हो, या शूरवीर हो।।

16

मगर आया है जो इस जग में, वह जरूर जायेगा।
और कर्मानुसार फल भी, वह जरूर पायेगा।।
प्रभु के द्वार पर है न्याय, अन्याय नहीं है।1
उनकी पकड़ से बचने का, उपाय नहीं है।।

17

मेरा ईश्वर जगत का ईश है, इन्सान नहीं है।
हिन्दू या सिक्ख, जैनी, मुसलमान नहीं है।।
उसके यहाँ है न्याय, पक्षपात नहीं है।
क्योंकि, उस निराकार की, कोई जात नहीं है।।

18

अभी कर लो भजन, भगवान का यह काम आयेगा।
सभी छूटेंगे धन व जन, मगर यह साथ जायेगा।।
कहें 'भिक्षुः' यती संसार की, मत आस कीजिये।
फ़कत सच्चा प्रभु का नाम है, विश्वास कीजिये।।

आरती गीता माता की

ॐ जय गीते माता, मैया जय गीते माता ।
जो नर पाठ करे नित, सो नर तर जाता ॥
ॐ जय० ॥1॥

रवि सम तम अघ नाशिनी, शशि सम शीतलता ।
जन्म-दातृ सम जननी, नभ-सम निर्मलता ॥
ॐ जय० ॥2॥

सुन्दर सरस सुधा सम, संयम नियम भरी ।
निज स्वरूप दरशावनि, भव भय नाशकारी ॥
ॐ जय० ॥3॥

काम क्रोध मद मर्दनि, लोभ मोह नाशी ।
भक्ति मुक्ति वरदायिनि, सत चित् सुख राशी ॥
ॐ जय० ॥4॥

वेद शास्त्र श्रुति सम्मत, अभिमत फल देनी ।
कर्म धर्म की प्रेरक, श्रम भ्रम हर लेनी ॥
ॐ जय० ॥5॥

श्री हरि निज मुख गायो, गीता नाम भयो ।
मोह जनित अर्जुन के, संशय शोक गयो ॥
ॐ जय० ॥6॥

जो गीता नित ध्यावत, करके शुद्ध मती ।
मन भावत वर पावत, गावत 'भिक्षुयती' ॥
ॐ जय० ॥7॥

आरती सद्गुरुदेव जी की

ॐ जय सद्गुरुदेव हरे, स्वामी जय सद्गुरु देव हरे ।
कृपा-दृष्टि अवलोकहु, करुणा-दृष्टि विलोकहु,
मन की जलन जरे ॥ॐ जय सद्गुरु०॥टेक॥

वाणी सरल सुधा सम, तम भ्रम देर करे,
स्वामी मम भ्रम दूर करे ।
ब्रह्मज्ञान के दाता, तत्वज्ञात के दाता,
वक्ता कुशल खरे ॥ॐ जय सद्गुरु०॥1॥
गुरु चरणामृत पावन, परसत पाप टरे,
स्वामी परसत पाप टरे ।
तव पद-पदम पखारत, तव पद पद्म निहारत,
तन मन उभय ठरे ॥ॐ जय सद्गुरु०॥2॥
जप तप व्रत मखा पूजा, तीर्थ अनेक करे,
स्वामी तीर्थ अनेक करे ।
गुरु बिन ज्ञान न होवे,
सद्गुरु बिनु ज्ञान न होवे,
नहिं भवसिन्धु तरे ॥ॐ जय सद्गुरु०॥3॥
सद्गुरु मन्त्र अमोलक, जो नर नित सुमिरे,
स्वामी जो नर नित सुमिरे ।
जीवन-मुक्त सदा सो, जीवन-मुक्त सदा हो,
निर्भय हो विचरे ॥ॐ जय सद्गुरु०॥1॥
गुरु-वचनामृत पावन, ज्ञान विरागे भरे,
स्वामी ज्ञान विराग भरे ।
वचन सुनत भ्रम नाशत, वचन सुनत तम नाशत,
शीतल हृदय करे ॥ॐ जय सद्गुरु०॥5॥
देव दनुज नर किन्नर, नर तन जो भी धरे,
स्वामी नर तन जो भी धरे ।
'भिक्षुयति' भूपति सब, 'भिक्षुयति' सुरपति सब,
सद्गुरु जी की शरण पड़े ॥ ॐ जय सद्गुरु०॥6॥

मैं तो सोच सोच कर हारा

मैं तो सोच सोच कर हारा,
तेरियां तूँ जान मालका ॥ टेक ॥

किस धातु से पवन बनाया, किस धातु से पानी ।
कैसे किया तेज की रचना, भेद कोई न जानी ॥
कैसे रच दिया सूरज तारा, तेरियां तूँ० ॥ मैं तो०॥1॥

कैसे किया भूमि की रचना, कैसे शिखर बनाया ।
कैसे नदी सरोवर रचकर जल की धार बहाया ॥
कैसे रच दिया सागर खारा, तेरियां तूँ० ॥ मैं तो०॥2॥

कैसे किया बीज की रचना, कैसे वृक्ष बनाया ।
कैसे पत्ती फूल बनाकर, नाना भाँति सजाया ॥
कैसे फल विच रस तूने डारा, तेरियां तूँ० ॥ मैं तो०॥3॥

नाना भाँति जगत के प्राणी, नाना शक्ल बनाया ।
मानव दानव देव दनुज, नर नारी कोई कहाया ॥
कोई बन गया सुत, कोई दारा, तेरियां तूँ० ॥ मैं तो०॥4॥

कैसे बादल दल आकाश में करें गर्जना भारी ।
कभी न टपके बूँद कभी तो भर दें नदियाँ सारी ॥
कैसे करे बिजली का चमकारा, तेरियां तूँ० ॥ मैं तो०॥5॥

बगुला हंस बनाया उज्जवल, कागा कोयल काली ।
लाल चोंच दे दिया सुआ को, पंखों में हरियाली ॥
कैसे मोर को खूब संवारा, तेरियां तूँ० ॥ मैं तो०॥6॥

गन्ना मीठा, मिर्चा तीखा, खारा नमक बनाया ।
मिट्टी पानी एक सभी का, भेद कहाँ से आया ॥
कोई मीठा कोई तीखा, कोई खारा, तेरियां तूँ० ॥ मैं तो०॥7॥

ज्ञानी ध्यानी धनी बली कोई, सेवक स्वामी कहाया ।
'भिक्षुः' पीर फकीर किसी को, शहनशाह बनाया ॥
तेरी मर्जी का सारा है नज़ारा, तेरियां तूँ० ॥ मैं तो०॥10॥